SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-02| December- 2025
Available online at: https://shikshasamvad.com/
DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i2.6

सतत् विकास और आर्थिक वृद्धि (जिला–कोण्डागॉव के विशेष संदर्भ में)

समलेश पोटाई

सहायक प्राध्यापक (भूगोल)

शासकीय गुण्डाधूर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोण्डागॉव (छ.ग.)

प्रस्तावनाः– सतत् विकास और आर्थिक वृद्धि आधुनिक जगत की दो ऐसी महत्वपूर्ण संकल्पनाएँ हैं जो किसी भी राष्ट्र की प्रगति की दिशा और गति को निर्धारित करती हैं। आर्थिक वृद्धि किसी भी क्षेत्र की मात्रात्मक वृद्धि को दर्शाती है, जैसे– उत्पादन, आय और रोजगार, वहीं सतत् विकास तात्कालिक आवश्यकता को पूरा करते हुये भविष्य के पीढ़ीयों के हितो से समझौता किए बिना गुणात्मक वृद्धि पर बल देता है। इस तारतम्य में 2012 में नवगठित कोण्डागॉव जिले का अध्ययन किया जा रहा है। जिला कोण्डागॉव, छत्तीसगढ़ के दक्षिण पूर्व में स्थित है। जिसे भौगोलिक दृष्टिकोण से दण्डकारण्य पठार के उतर में अवस्थित है। इसकी अक्षांशीय स्थिति 19° 57′ उत्तरी अक्षांश एवं देशांतरीय स्थिति 81° 66′ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। जिले का सम्पूर्ण क्षेत्रफल 7768.907 वर्ग किमी. है। यहां जनजाति समुदाय एवं समृद्ध वन संपदा का अद्वितीय मिश्रण है। इसके उत्तर में कांकेर व धमतरी, दक्षिण में बस्तर, पश्चिम में नारायणपुर जिला तथा पूर्व में ओड़िसा स्थित है। जिला कोण्डागॉव जनजाति समुदायों के विकास जो कि अपनी प्राकृतिक संपदा एवं सांस्कृतिक धरोहर के लिए जाना जाता है परन्तु नवगठित जिला 2012 में स्थापना के पश्चात मानव विकास के लिए ऐसा जटिल प्रक्रिया को अपना रहा है, जो समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करती है। हांलाकि इसका पर्यावरण पर प्रभाव गहरा और व्यापक है। इसके परिणामस्वरूप सतत् विकास और आर्थिक वृद्धि के स्थिरता पर क्या प्रभाव पड़ता है। इस अध्ययन का उद्धेश्य जिला कोण्डागॉव के सतत् विकास एवं आर्थिक वृद्धि पर होने वाले प्रभाव जिसमें विकास और पर्यावरणीय समस्याओं बीच के जटिल संबंध को उजागर करना है, ताकि सतत विकास की दिशा में प्रभावी नीतियां विकसित की जा सकें।

इस शोध में कोण्डागॉव जिले के विकास पर आधारित दो प्रमुख पहलुओं का गहन विश्लेषण करेगा–

1. सतत् विकास लक्ष्य स्कोर 2015 – 2024।
2. जनसांख्यिकीय – शैक्षिक– सामाजिक ऑकड़े (2011–12 बनाम 2023–24)

अध्ययन का उद्धेश्य –

1. सतत् विकास लक्ष्य के आधार पर जिला – स्तरीय विकास को आंकना।
2. जिले की जनसांख्यिकीय और सामाजिक प्रगति का विश्लेषण करना ।

3. विकास के क्षेत्रीय असमानताओं का विश्लेषण करना।
4. विकास की उपलब्धियों एवं चुनौतियों का पहचान करना।
5. भविष्य की विकास नीतियों के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।
6. जिले के आर्थिक विकास को पहचान करना जिससे सतत् विकास लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

डेटा स्त्रोत एवं पद्धति – प्रस्तुत अध्ययन विश्लेषणात्मक एवं अनुभव परक है। जो द्वितीय संमकों पर आधारित है–

द्वितीय स्त्रोत – सतत् विकास लक्ष्य, स्कोर 2015–24।

जनसांख्यिकीय और सामाजिक ऑकड़े 2011–12 एवं 2023–24।

सतत विकास लक्ष्य – सतत विकास एक महत्वपूर्ण संकल्पना है जिसका उद्धेश्य भविष्य की पीढ़ियों की अपनी जरूरतों का पूरा करने के लिए उपलब्ध संसाधनों की निरंतरता के उपर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना वर्तमान की जरूरतों को पूरा करना है। इसमें पर्यावरण की रक्षा और सामाजिक समानता को बढ़ावा देने के साथ–साथ आर्थिक वृद्धि और विकास हासिल करने के तरीके ढूंढना शामिल है। सतत विकास शब्द 1987 में संयुक्त राष्ट्र की ष्नत ब्वउउवद निजनतमष् रिपोर्ट में गढ़ा गया था, जिसे ब्रंटलैण्ड रिपोर्ट के रूप में भी जाना जाता है।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम ;न्छम्द्ध के अनुसार – ''विकास एक विस्तृत आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक प्रक्रिया है जिसका उद्धेश्य समस्त जनसंख्या और इसके व्यक्तियों की खुशहाली में इस प्रकार का सुधार करना है कि विकास में और उससे उत्पन्न लाभों के निष्पक्ष वितरण में उनकी सक्रिय, स्वतंत्र तथा सार्थक भागीदारी हो।''

सतत विकास और आर्थिक विकास का संबंध – सतत विकास और आर्थिक वृद्धि के बीच एक गहरा और समग्र संबंध है, जो आर्थिक विस्तार और पर्यावरण की सुरक्षा को एक साथ जोड़ता है। आर्थिक वृद्धि सतत् विकास का प्रथम चरण माना जा सकता है। जिसका मुख्य उद्धेश्य लोगों की गुणवत्ता जीवन में सुधार करना है, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण और आर्थिक अवसर शामिल हैं। यह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी पूर्ण क्षमता तक पहुचने का अवसर मिले। सतत् विकास को आर्थिक विकास से मापा जाता है क्योंकि आर्थिक विकास से प्रति व्यक्ति आय, रोजगार एवं सामाजिक विकास का सूचंक होता है ।

सतत विकास लक्ष्य, जो संयुक्त राष्ट्र द्वारा 2015 में स्थापित किए गए थे, 17 वैश्विक लक्ष्य हैं जिनका उद्धेश्य गरीबी समाप्त करना, शिक्षा, स्वास्थ्य, ऊर्जा और पर्यावरण की रक्षा करना है। इन लक्ष्यों में से कई आर्थिक विकास के मूल तत्वों को सीधे संबोधित करते हैं। जिसमें गरीबी की समाप्ति और भोजन की सुरक्षा, मानव विकास के लक्ष्यों के साथ सीधे जुड़ें हुए हैं। इसी प्रकार, स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता और गुणवता में सुधार पर ध्यान केंद्रित करता है, जो आर्थिक वृद्धि का एक महत्वपूर्ण पहलू है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का लक्ष्य सभी तक शिक्षा के अवसर प्रदान करना है, जो आर्थिक विकास का आधारशिला है। सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आर्थिक विकास के पहलुओं को ध्यान रखना होगा जिसमें जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को सामना करने के लिए लोगों की जागरूकता और शिक्षा आवश्कता है, जो दीर्घकालीन विकास का हिस्सा है। ''**आर्थिक विकास का अभिप्राय वास्तविक राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि से है और यदि किसी अर्थव्यवस्था में इसमें वृद्धि हो रही है तो कहा जा सकता है कि उसका आर्थिक विकास हो रहा है। आर्थिक विकास एक गत्यात्मक प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत किसी अर्थव्यवस्था की वास्तविक राष्ट्रीय आय एक दीर्घकालीन सन्दर्भ को बढ़ती है।''**

प्रमुख लक्ष्य पर फोकस

1. गरीबी का अंत (SDGs) – गरीबी के सभी रूपों का अंत करना है। जिला कोण्डागॉव में 2015 की गरीबी उन्मूलन के लिए कई योजनाएं पहले चल रही थीं, लेकिन इसके परिणाम सीमित थे। वो पूरी तरह से प्रभावी नहीं हो पाई थीं । जिला के गरीबी बहुआयामी अभाव में 2015 का स्कोर 0.226 बहुत ही खराब था जिसमें 2024 में बड़ा सुधार के साथ 0. 12 हुआ है। सामान्य स्कोर 30.14 से बढ़कर 77.78 हो गया है फिर भी बहुआयामी गरीबी, स्वास्थ्य बीमा कवरेज में सिर्फ 9 प्रतिशत की बढ़त हासिल हुआ है, मनरेगा रोजगार, विकलांग रोजगार और कच्चे मकानों में रहने वाले 2015 में 96 प्रतिशत थे जो वर्तमान में 59.35 प्रतिशत है कमी में सुधार की कमी देखने को मिल रहा है। **SDGs** स्कोर 23 से 45 तक वृद्धि किया है। जनसांख्यिकीय ऑकड़े 2012 – 24 में कुल परिवारों में 25.35 प्रतिशत वृद्धि हुई जिसमें से कार्यशील जनसंख्या की वृद्धि 19.21 प्रतिशत हुई है जो कि रोजगार के अवसर में वृद्धि को दर्शाता है।

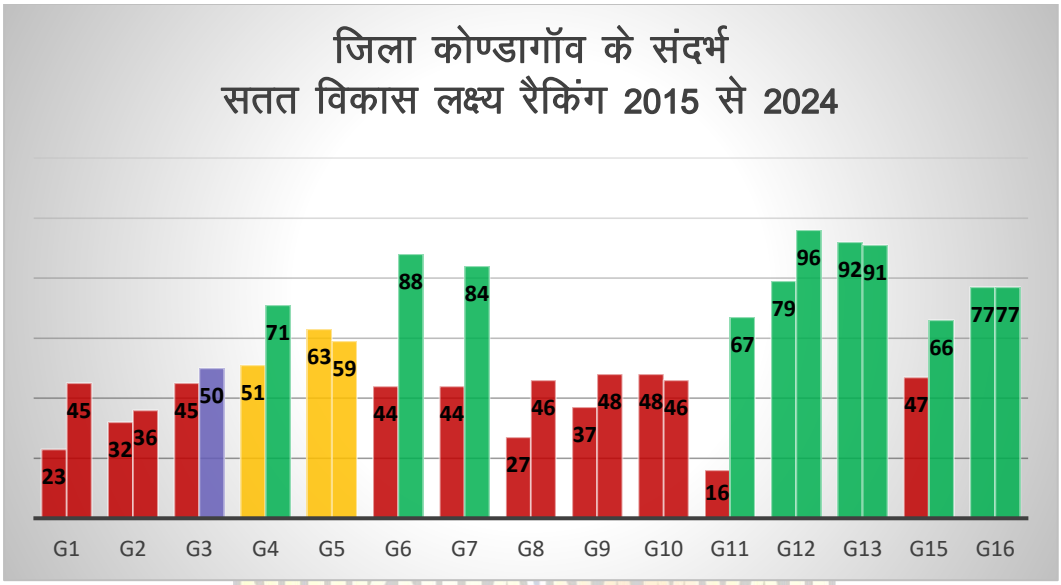

2. भूखमरी समाप्त करना (SDGs) – भूखमरी की समाप्ति एवं खाद्य सुरक्षा पौष्टिक भोजन की उपलब्धता सुनिश्चित करते हुये वर्ष 2030 तक भूखमरी एवं कुपोषण को समाप्त करना है। जिले के सतत् विकास लक्ष्य के संकेतकों में पोषण, खाद्य सुरक्षा और बच्चों की सेहत से संबंधित 2015 से 2024 के बीच सुधार हुआ है। जिसमें न्दकमतूमपहीज और ैजनदजमक बच्चों की संख्या में कमी आयी है जो पोषण और स्वास्थ्य सेवाओं का बेहतर संकेत को दर्शाता है। छथै। के अंतर्गत पात्र जनसंख्या की कवरेज भी 65.9 प्रतिशत से बढ़कर 86.66 प्रतिशत हो गया है जो खाद्य सुरक्षा में सुधार को दर्शाता है। वहीं किशोरियों और गर्भवती महिलाओं में एनीमिया एक प्रमुख चिंता बनती जा रही है। स्वस्थ्य सेवाओं में सुधार की जरूरत को दर्शाती है। वहीं कृषि उत्पादकता के दृष्टि से धान और गेंहूँ दोनों फसलों में गिरावट दर्ज की गयी जो संसाधनों के अभाव एवं जलवायु के प्रभाव को दर्शाता है। **SDGs** स्कोर 32 से 36 तक वृद्धि किया है जो कि सुधार की जरूरत है।

3. स्वास्थ्य सुविधा (SDGs) – सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करना जो कि सतत विकास के लिये महत्वपूर्ण है। इसके अंतर्गत सभी प्रमुख स्वास्थ्य केन्द्रों के निवारण पर केंद्रित है। जिसमें गर्भवस्था और शिशु मृत्युदर में कमी लाना, और मातृ और शिशु स्वास्थ्य को बेहतर बनाना के साथ ही मृत्यु दर को कम करने पर ध्यान दिया गया है। कोण्डागॉव जिला के परिप्रेक्ष्य में 2015 में स्वास्थ्य सुविधाएं सीमित थीं। ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक स्वास्थ्य की जरूरत थीं। 2024 में स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार हुआ है, जिसमें स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार के साथ टीकाकरण

© Shiksha Samvad| Received: 03 December 2025 | Accepted: 10 December 2025 | Published: 15 December 2025

अभियान जागरूकता कार्यक्रम होने से ैक्ळे स्कोर 45 से 50 तक वृद्धि किया है। जिसमें और सुधार की जरूरत है। जनसांख्यिकीय ऑकड़े 2012 – 24 में लिंगानुपात 1033 से 1050 तक सुधार हुआ है। 0–6 आयुवर्ग लिंगानुपात में 1006 से 1000 तक इसमें कमी देखने को मिल रही है। लिंगानुपात में सुधार होना अच्छे स्वास्थ्य सुविधा को दर्शाता है।

4. गुणवतायुक्त शिक्षा (SDGs) – शिक्षा हमारे आर्थिक वृद्धि और सतत् विकास दोनो के भी महत्वपूर्ण है और इसका मापन बच्चों की स्कूल में नामांकन दर और गुणवतापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के अवसरों में वृद्धि हुई है। कोण्डागॉव जिला में 2015 में सरकारी स्कूलों में बुनियादी सुविधाएं, शिक्षक की नियुक्ति, और शिक्षा के स्तर में सुधार के प्रयास किए गए थे। और 2024 जिले में बच्चों की स्कूल में नामांकन दर और गुणवत्तापूर्ण षिक्षा प्राप्त करने के अवसरों में वृद्धि हुई है। आज कुल साक्षर 45.57 प्रतिशत वृद्धि हुई है। जिसमें पुरूष साक्षरता 67.45 प्रतिशत से 75.74 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता में 45.37 प्रतिशत से 57.02 प्रतिशत तक वृद्धि हुई है। वहीं जनसांख्यिकीय ऑकड़े 2012 – 24 में कुल साक्षरता दर में 17.63 प्रतिशत, पुरूष साक्षरता दर 12.29 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता दर में 25.67 प्रतिशत की वृद्धि देखने को मिलता है। ैक्ळे स्कोर 51 से 71 तक उल्लेखनीय वृद्धि किया है जो कि महिला साक्षरता से स्वास्थ्य और आर्थिक भागीदारी को बढ़ाने के साथ मानव संसाधन विकास का संकेतक है।

5. लिंग समानता (SDGs) – कोण्डागॉव जिला में महिलाओं और पुरूषों के बीच लिंग समानता में अच्छे प्रयास किए गए थे। जनसांख्यिकीय ऑकड़े 2012 – 24 में महिला जनसंख्या में 16.28 प्रतिशत की वृद्धि और महिला साक्षरता दर 45.37 प्रतिशत से 57.02 प्रतिशत की वृद्धि हुई है साथ ही महिला कार्यबल भागीदारी अनुपात में 53.79 से 55.64 प्रतिशत की सामान्य वृद्धि देखने को मिलता है। लिंगानुपात 1033 से 1050 तक सुधार हुआ है वहीं **SDGs** स्कोर में 63 से 59 तक 4 की कमी किया है।

6. स्वच्छ जल और स्वच्छता (SDGs) – जिले में स्वच्छ जल की आपूर्ति और स्वच्छता के मुदे पर ध्यान दिया गया था, लेकिन पर्याप्त इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी थी और ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ जल की पहुंच सीमित थी। 2024 तक जल आपूर्ति और स्वच्छता की दिशा में बड़ी प्रगति को दर्शाता है। अब जिले में नल से जल वितरण, खुले में शौच से मुक्त **SDGs** गांवों की संख्या में वृद्धि, और स्वच्छता अभियानों के माध्यम से बड़ी सफलता मिली है। **SDGs** स्कोर 44 से 88 तक उल्लेखनीय वृद्धि किया है।

7. सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा SDGs) – जिले में 2015 में ऊर्जा की उपलब्धता और गुणवता में कमी थी, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में । विद्युत आपूर्ति की स्थिति भी उतनी अच्छी नहीं थी। सतत् विकास रिपोर्ट 2024 के अनुसार स्वच्छ ऊर्जा स्त्रोतों की बढ़ती उपलब्धता, सौर ऊर्जा की परियोजनाओं और ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली आपूर्ति में सुधार हुआ है। **SDGs** स्कोर 44 से 84 की उल्लेखनीय वृद्धि किया है।

8. समान कार्य और आर्थिक वृद्धि (SDGs) – जिले में रोजगार सृजन की स्थिति उतनी मजबूत नहीं है। यहॉ के उद्योग, खासकर कृषि आधारित लघु और कुटीर उद्योगों के विकास करने की जरूरत है जिससे समग्र आर्थिक वृद्धि और रोजगार सृजन की दिशा में सुधार हो सके। **SDGs** – **8** मे के रिपोर्ट के अनुसार जिले में बैंकिग पहुंच में 7 से 88 हो गया है ।ज्ड सुविधा में 4 से 8.13 तक हुआ है। महिलाओं की जन धन खाता में स्थिरता बनी हुई 55.37 प्रतिशत से 54.8 प्रतिशत होगी है जो एक चिंता को दर्शाता है। युवा श्रम शक्ति भागीदारी में और सुधार की जरूरी है।**ैक्ळे** स्कोर 27 से 46 तक वृद्धि किया है। जनसांख्यिकीय ऑकड़े 2012 – 24 में कुल कार्यशील जनसंख्या 19.21 प्रतिशत के वृद्धि हुई है । पुरूष कार्यबल में 2.98 प्रतिशत की वृद्धि और महिला कार्यबल में न के बराबर है जो कि इस लक्ष्य में सुधार की जरूरत है।

© Shiksha Samvad| Received: 03 December 2025 | Accepted: 10 December 2025 | Published: 15 December 2025

9. उद्योग, नवाचार और बुनियादी ढांचा (SDGs) – कोण्डागॉव जिले में उद्योग, नवाचार और बुनियादी ढ़ाचा पर देखें तो प्रधानमंत्री सड़क योजना का प्रदर्शन 2015 से 2024 में क्रमश : 74 प्रतिशत से 99 प्रतिशत के साथ बहुत सुधार हुआ है परन्तु विनिर्माण क्षेत्र में रोजगार सृजन के क्षेत्र में अभी नगण्य है जो कि आर्थिक वृद्धि के लिए चिंता को दर्शाता है 0. 03 से 0.046 प्रतिशत जो कि ना के बराबर है उद्योग या मैन्युफैक्चरिंग क्लस्टर विकसित नहीं हुई है **SDGs** स्कोर 37 से 48 तक वृद्धि किया है

10. असमानता को कम करना (SDGs) – असमानता, विशेषकर सामाजिक और आर्थिक असमानता, जिले में प्रमुख चुनौती थी। सतत् विकास लक्ष्य 10 के अंतर्गत असमानता के कोई खास सुधार नहीं हुआ है स्थानीय निकायों में अनुसूचित जनजाति एवं अनुसूचित जाति के प्रतिनिधित्व में प्रगति नहीं हुई है 24.67 प्रतिशत था वही है साथ ही सबसे गरीबी आबादी में और वृद्धि हुई है 68.4 प्रतिशत से 74.01 प्रतिशत हो गयी जो आर्थिक विकास के लिए चिंता को रंखाकित करता है। अपराध दर में सामान्य दर में सुधार देखने को मिलता है। **SDGs** स्कोर 48 से 46 तक 2 की कमी हुआ है।

11. सतत शहरीकरण और सस्टेनेबल शहर (SDGs) – सतत् शहरीकरण लक्ष्य का उद्धेश्य शहरों एवं मानव बस्तियों को समावेशी, सुरक्षित, लचीला एवं संवहनीय बनाना है। इसके अंतर्गत 2015 में कोण्डागॉव जिला का **SDGs** स्कोर 16 थीं जो बेहतर शहरी इंफ्रास्ट्रक्चर और परिवहन सुविधाओं के कारण अब **SDGs** स्कोर 67 हो गयी है। जो एक सतत् विकास के दृष्टिकोण से सकारात्मकता को दर्शाता है।

12. जिम्मेदार उपभोग और उत्पादन (SDGs) – जिले में स्थिति बेहतर उत्पादन एवं उपभोग प्रवृति को अपनाए हैं जिसका सतत् विकास के स्कोर 79 से 96 तक उल्लेखनीय वृद्धि किया है। जो कि आर्थिक वृद्धि के सकारात्मकता को दर्शाता है।

13 जलवायु परिवर्तन को रोकना (SDGs) – जलवायु परिवर्तन एवं इसके प्रभावों से निपटने के लिये जिला में वृक्षारोपण और ऊर्जा दक्षता पर कार्य उपलब्धता व क्षमताओं पर कार्य किया है। जिससे विषम चरम मौसम परिस्थितियों एवं ग्रीन हाऊस गैंसों की बढ़ती सांद्रता को कम करता है। सतत् विकास रिपोर्ट **SDGs** स्कोर 92 से 91 तक एक की कमी के साथ अच्छे स्थिति को दर्शाता है।

15. स्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र (SDGs) – इस लक्ष्य के दृष्टि से जिले में वनों के स्थायी प्रबंधन एवं जैव विविधता सुरक्षा के लिए प्रबंधन पर कार्य किया है जिससे गरीबी उन्मूलन एवं रोजगार सृजन के क्षेत्र में कार्य किया है। **SDGs** स्कोर 47 से 66 तक वृद्धि किया है।

16. शांति, न्याय और मजबूत संस्थाएं (SDGs) – इस लक्ष्य में जिले की शांति और न्याय के मामलों में सुधार यथावत है। यहां पर कानून व्यवस्था, न्यायिक प्रणाली और शासन के मामलों में सुधार के साथ सामाजिक संरचनाएं में सुधार की जरूरत है। **SDGs** स्कोर 77 ही रहा है।

चुनौतियॉ

1. जिले के सतत् विकास लक्ष्य Goal 1 और Goal 2 भूखमरी का स्कोर क्रमशः 45 और 36 पाए गए, जो दोनों लक्ष्यों में स्पष्ट रूप से कमी को दर्शाते हैं।
2. ग्रामीण रोजगार एवं आर्थिक गतिविधियों Goal 8 स्कोर–46 है जो इस क्षेत्र में सुधार की जरूरत को बताता है।
3. उद्योग, नवाचार व अवसंरचना Goal 9 स्कोर – 48 है, जो इसकी धीमी गति प्रदर्शित करती है।

© Shiksha Samvad| Received: 03 December 2025 | Accepted: 10 December 2025 | Published: 15 December 2025

4. सामाजिक –आर्थिक असमानता Goal 10 स्कोर – 46 है, जो एक बड़ा मुद्दा बना हुआ है।
5. स्वास्थ्य एवं लैंगिक समानता में सुधार के साथ कुछ संकेतकों में गिरावट भी देखने को मिलता है।
6. शहरी एवं ग्रामीण विकास में असमानता है।

सुझाव –

जिला कोण्डागॉव के जनसांख्यिकीय ऑकड़ों एवं सतत् विकास लक्ष्य के रिपोर्ट का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि विकास लक्ष्य 1, 2, 8, 9, एवं 10 के लिए में कार्य करने की आवश्कता है जिससे **दीर्घकालीन विकास** को प्राप्त किया जा सके। इसके लिए **मनरेगा जैसे ग्रामीण रोजगार योजनाओं** को कियान्वयन करना होगा जिसमें स्वरोजगार एवं लघु उद्योग को बढ़ावा मिल सके। **कुपोषण** को दूर करने के लिए **पोषण कार्यक्रम** का सख्ती से पालन करने की जरूरत है। **आर्थिक वृद्धि व रोजगार** के लिए **स्थानीय उद्योंगों एवं पर्यटन विकास** को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। **उद्योग, नवाचार व अवसंरचना** में सड़क, **इंटरनेट और मोबाइल नेटवर्क की गुणवता और कृषि आधारित प्रसंस्करण** केन्द्र स्थापित करने की जरूरत है। असमानता में कमी के लिए शहरी व ग्रामीण के बीच अंतर को कम करने के लिए शिक्षा सुविधाएं को विकास करना जिससे स्वास्थ्य और महिलाओं की भागीदारी को सुनिश्चित किया जा सके।

निष्कर्ष :– कोण्डागॉव जिले के **SDGs** के स्कोर एवं जनसांख्यिकीय ऑकड़ों का तुलनात्मक विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि एक दशक हुये जिले की स्थापना से विकास की ओर कदम बढ़ाया रहा है। कुछ क्षेत्रों में तेजी से विकास हुआ है विशेषकर, **स्वच्छ जल, ऊर्जा एवं जलवायु गतिविधियों एवं उत्पादन** जैसे लक्ष्यों में छत्तीसगढ़ में जिले का प्रदर्शन अग्रणी सूचकांक आता है। यह प्रशासनिक व्यवस्था, मूलभूत सुविधाएं एवं सामुदायिक दायित्वों में सकारात्मक परिवर्तन प्रदर्शित हो रहा है। यह परिवर्तन आर्थिक वृद्धि के लिए आधार निर्मित करता है जो भविष्य में टिकाउ विकास को प्रबल बनाती है।

वहीं दूसरी ओर **निर्धनता, भूखमरी, कुपोषण, सीमित औद्योगिक विकास, रोजगार के सीमित अवसर एवं सामाजिक–आर्थिक में असमानता** जैसी बाधा अब भी हैं जो जिले के क्षेत्रीय विकास के प्रमुख चुनौतियों में से एक हैं। **रोजगार के सीमित साधन, कृषि पर अत्याधिक निर्भरता, परिवहन व नेटवर्क अवसंरचना की कमी, औद्योगिक विकास में कमजोर और पोषण सुविधाओं में असमान वितरण।** इन सभी संरचनात्मक संकेतों में कमजोर प्रदर्शन है। यह समस्यॉए दर्शाती हैं कि आर्थिक वृद्धि सिर्फ मात्रात्मक नहीं, बल्कि जीवन स्तर, पोषण सुरक्षा, आजीविका और सामाजिक न्याय से जुड़कर ही संधारणीय विकास कर सकती है।

इसके साथ ही क्षेत्रीय विकास के चुनौतियों में **भौगोलिक विषमता, संसाधनों की सीमित औद्योगिक उपयोग एवं जनजातीय बहुलय** क्षेत्र से उत्पन्न हो रही है। संसाधनों की उपलब्धता के बावजूद मूल्य वर्धन के अभाव में आर्थिक वृद्धि को सीमित रखता है। सतत् विकास तभी सम्भव है जब **स्थानीय समुदायों की भागीदारी सुनिश्चित हो जिसमें कौशलता, बाजार एवं लघु उद्योगों** पर विशेष ध्यान दिया जाए।

इन सभी पहुलुओं को देखते हुए यह स्पष्ट है कि कोण्डागॉव जिले का विकास के आधार स्तंभ मजबूत हैं, परंतु संधारणीय विकास को प्राप्त करने के लिए स्थानीय संसाधनों पर आधारित उद्योग, युवा एवं महिलाओं की आर्थिक भागीदारी को सुनिश्चित करते हुए सामाजिक–आर्थिक अवसंरचना को मजबूत करने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची :–

1. भू– अभिलेख शाखा जिला कोण्डागॉव (छ.ग.)
2. छत्तीसगढ़ भौगोलिक अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी

3. *प्रादेशि नियोजन एवं विकास – डॉ. एस.डी.मौर्य*

4. *छत्तीसगढ़ जन सांख्यिकीय विभाग*

5- *https://descg.gov.in*

6- *https://SDGs_pc.cg.gov.in*

Cite this Article:

समलेश पोटाई, "सतत् विकास और आर्थिक वृद्धि (जिला–कोण्डागॉव के विशेष संदर्भ में)" *Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 02, pp.40-46, December 2025. Journal URL: https://shikshasamvad.com/*

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

समलेश पोटाई

For publication of research paper title

सतत् विकास और आर्थिक वृद्धि (जिला–कोण्डागॉव के विशेष संदर्भ में)

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-02, Month December 2025, Impact Factor-RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/

DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i2.6